(18) (330)

नशा-युवा पीड़ी का अभीशाप

आज हमारे समाज में नौजवान लोग नशे का शिकार बन रहे हैं। उन्हें वो सोच और समझ नष्ट हो रहा है। इसमें एक महत्व हीसा उन्के माता, पिता भी हैं। जब बच्चे देर रात घर आते हैं तो तब उन्के माता, पिता यह नहीं पुछते की वो कहाँ गया, क्यों देर हुई यह सब वे नहीं पुछते। आज बच्चें भी इसके शिकार बनगए हैं। वो अपने मन की बात माता, पिता से नहीं कहते हैं क्यों कि वो अपने माँ और-पिता से डरते हैं। वो समझते हैं कि जब यह बात अपने माता, पिता से कहेगे तो वो उन्हें मारेंगे या डाटेंगे। यह सोचकर वो नहीं बता थे। यह भी एक बड़ा कारण है। अगर माता, पिता बच्चों से प्यार में बात करके उन्हें समझपाते तो यह नहीं होता। नई पीड़ीयों को नहीं मालूम की वो कैसे दोस्त जुने। उन्के दोस्ती भी इसका कारण है। जब वो नशे शिकार बनगये तो वो समझ बेटे की उन्की जिंदगी खत्म होगई। वो अपने आप को इस बड़ी खतरा का शिकार समझकर अपने जान देदेते हैं। अगर उस समय उस बच्चे के माँ, बाब उसे ना ठुकराकर उसे इस मुशकिल से बाहर लाने का कोशिश करते तो एसा नहीं होता। इसमें बहुत बड़ा हाथ समाज का भी है। वो एसे बच्चों को नहीं अपना थे। बल्की उन्हें तोड़ा और पीड़ित करते हैं। यह नशा उन्हे ज्यादातर उन्की दोस्तों से ही प्राप्त होता है। उन्के दोस्ती एक गंदे दोस्त से होरहा है तो उसे उस दोस्ती को तोड़ देना चाहिए। नहीं तो वो भी उसका शिकार बन जाएगा।

हमें कभी नशे का शिकार बने बच्चों को ठुकराना नहीं चाहिए। बल्की हमें उनके साथ ज्यादा समय बिताकर उन्हे समझाना चाहिए कि नाशे का उपयोग ना करें। क्यों कि वो नाशा उनकी जान ले सकता है। सिर्फ उनकी ही नहीं जीने वो प्यार करते हैं उनके घर वालों का जान भी ले सकता। ~~ऐसा~~ एसे बच्चों के लिए उनके मन को प्रेरणा देने वालि कक्षा, प्रोग्राम और अनेक कार्य कर सकते हैं, कि उन्हे यह बताकर की हम उनके साथ है, उन्हे इस खतरा से बचाने। हम सब नागरीक की जिमदारी हैं बच्चों इन सारे चिजो से दूर रखना। उन्हे यह बात कहना चाहिए की वो हमारे देश के नई पीड़ीयाँ है। उन्हे बड़े होकर उनकी पसंदीता नौकरी करने के लिए उन्हे यह सब चिजों का इस्तमाल नहीं करना चाहिए।

और हमें हर एक विद्यालय में नाशा का सेवन करने से क्या-क्या होना है नई पीड़ीयों को बताना चाहिए। उनके जान तक यह ले सकती हैं। अगर उन्हे किसीने इसका सेवन करने के लिए कहाँ तो हमें बतानाचाहिए तब ही हम उन्हे बचा सकते है। अगर हमें किसी कोई भी ~~देखाकर लगता है~~ की वो ~~नशा~~ नाशा इस्तमाल करता है तो हमें अपनी अध्यापीका को बताना चाहिए तभी हम उसे बचा पाएगे। एसे नशा का सेवन करके हम कुछ कर सकते हैं हमें याद नहीं होगा की वो कोन है। इस नशे के कारण समाज में स्त्री का कोई सुरक्षा भी नहीं है।

इस नशे के कारण हमारे माँ, बहनों को शाम में अकेले आने केलिए सोचना पड़ता है। यह नशा एक शैतान है जो हम से बुरी काम करवाता है। अगर हम एसे बुरे काम नहीं करने चाहते तो हमें इससे दूर रहना पड़ेगा। जब बड़े लोग हमें समझाते हैं तो हमें उनकी बात को समझना चाहिए। वरना हम इसका शिकार बन सकते हैं। ज्यादातर हमें यह बात नई पीड़ीयों को ही समझाने चाहिए क्यों कि वो हमारे देश के भावि नागरीक हैं। उन्हे हमारा भारत राष्ट्र का नाम सारे दुनीया में रोशन करवाना है। अगर नई पीड़ीयाँ ही नहीं रही तो भारत नहीं।

हमारे समाज में यह नाशा नई पीड़ीयों केलिए एक शाप ही है। अगर हम इस शाप का शिकार बना नहीं चाहते तो हमें नशे का सेवन नहीं करना होगा। तभी भारत के सभी नई पीड़ियाँ भारत का अपने मातृभूमि का नाम सारे संसार में रोशन कर पाएगा।

नशा का सेवन नालें,

और सुख-खुशी जीवन जीएं।

इसे आधार कर के हम जीएं तो जरूर हम एक खुशहाल और विकसित भारत बना पाएंगे। भारत के सभी और प्रतेक नागरीक के सहयोग प्रयासों सेही हम इसे सफल कर सक

सकते हैं। हमे बड़े लोगों के उपदेश स्वीकार कर के उन्की इच्छा की तरह एक मेहनती, सच्चा और कर्तव्यनीष्ट इनसान बनना चाहिए। और इस लहरी चीजो को हमारे देश के सभी नागरीक से दूर रखना चाहिए। माता, पिता से मन की बातों को बताकर उन्से राय लेना चाहिए। सिर्फ़ तभी ही हम एक लहरी विमुक्त भारत बना पाएगे। और सबको बना पाएगे की नशा हमारे नई पीड़ियों की अभिशाप है। और इस अभिशाप से उन्हे दूर रखे।